Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

اِنَّ اللّٰہَ لَہٗ مُلۡکُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ یُحۡیٖ وَیُمِیۡتُ وَمَا لَکُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ مِنۡ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیۡرٍ

(सूरः तौबा : **116**)

अनुवाद : निश्चित अल्लाह ही है जिसकी ओर ज़मीन की बादशाही है। वह ज़िंदा करता है और मारता भी है और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई दोस्त और मददगार नहीं।

वर्ष- 9
अंक 18

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

22 शवाल 1445 हिज्री कमरी, 02 हिज्रत 1403 हिज्री शम्सी, 02 मई 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

कोई पड़ोसन अपनी पड़ोसन को छोटा न समझे

(2566) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे मुस्लिम महिलाओं ग़ौर से सुनो। कोई पड़ोसन अपनी पड़ोसन को छोटा न समझे जबकि वह बकरी का खुर ही (भेजे)।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर कई दफ़ा महीनों चूल्हा नहीं जलता

(2567) हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है उन्होंने उर्वा से कहा मेरी बहन के बेटे हमारी कभी यह हालत थी कि हम एक चांद देखते, फिर दूसरा चांद देखते, फिर तीसरा चांद देखते, इस तरह दो महीने गुज़र जाते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घरों में आग नहींजलती थी। मैं ने कहा ख़ाला आप रज़ियल्लाहु अन्हा का गुज़ारा किन चीज़ों पर होता था? उन्होंने कहा दो स्याह चीज़ें : खजूर और पानी, परंतु यह बात थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कुछ अंसारी हम-साए थे । उनकी दूध देने वाली बकरियां थीं और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने दूध से बतौर तोहफ़ा भेजा करते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम को भी पिलाते।

(सही बुख़ारी, किताब अल् हिबिया, भाग 4 प्रकाशन कादियान 2008 ई.)

बदज़नी बहुत बुरी चीज़ है, इन्सान को बहुत सी नेकियों से वंचित कर देती है और फिर बढ़ते बढ़ते यहां तक नौबत पहुंच जाती है कि इन्सान ख़ुदा पर बदज़नी शुरू कर देता है

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

जमाअत को नसीहत चिकित्सक के लिए जैसा ज़रूरी है कि तशख़ीस उम्दा तौर पर करे, इसी तरह वाज़ के मन्सब का यह फ़र्ज़ है कि वाज़-ओ-पंद से पहले इन लोगों के रोगों को दृष्टिगत रखे जिन में वे ग्रस्त हैं। परंतु मुश्किल तो यही है कि यह फ़िरासत और यह मार्फ़त, हक़्क़ानी वायज़ के सिवा दूसरे को मिलती ही कम है और यही वजह है कि मुल्क में वर्णन के साथ कि सैंकड़ों, हज़ारों नसीहत करने वाले फिरते हैं, लेकिन अमली हालत दिन-ब-दिन पस्ती की तरफ़ जा रही है। हर किस्म की एतेक़ादी, ईमानी,अख़लाक़ी गलतियां और कमज़ोरियाँ अपना असर करती जाती हैं। यह इस लिए कि वाज़ों में हक़्क़ानियत नहीं, रूह नहीं। यह सब कुछ है, परंतु मैं इस वक़्त अपने दोस्तों को यही बतलाना चाहता हूँ कि चूँकि उन्होंने अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अपने दिलों में तलब हक़ की प्यास को महसूस किया है, वह रास्ती और सदाक़त के लेने में मज़ायक़ा न करें। जबकि नसीहत करने वाले मुख़्तलिफ़ रंगों और पैरायों में अपना प्रश्न ही पेश करे, परंतु तुमको नहीं चाहिए कि केवल इस एक वजह से असल हिक्मत को छोड़ दो, क्योंकि वह जवान के प्रश्न को सुनकर उनको हक़ारत की निगाह से देखता है, वह भी तो ग़लती पर है। क्या किसी लाल और गौहर-ए-नायाब को केवल इसलिए फेंक दिया जा सकता है कि वह किसी बदबू दार और मैली कुचैली टली (धज्जी कपड़े की) में बंधा हुआ है? हरगिज़ नहीं। इसके सिवा अगर नसीहत करने वाला प्रश्न करता है तो क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि तुम्हें तो यह हुक्म दिया गया है कि وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنۡہَرۡ(अल् ज़ोहा : 4) और प्रश्न करने वाला चाहे घोड़े पर ही सवार हो कर आया है फिर भी वाजिब नहीं कि उस को रद्द किया जाए। तेरे लिए यह हुक्म है कि तू उस को झिड़क नहीं। हाँ ख़ुदा ने उस को भी हुक्म दिया है कि वह प्रश्न न करे। वह अपनी ख़िलाफ़वरज़ी की ख़ुद सज़ा पा लेगा लेकिन तुम्हें यह मुनासिब नहीं कि तुम ख़ुदा तआला के एक वाजिब अल् ज़ात हुक्म की न-फ़रमानी करो। उद्देश्य उसको कुछ दे देना चाहिए अगर पास हो और अगर पास कुछ नहीं तो नरम अल्फ़ाज़ से उस को समझा दो।"

शेष पृष्ठ 8 पर

जन्नतियों को सोने और मोतियों के कंगन और रेशमी वस्त्र पहनाए जाने का सही मफ़हूम जन्नत केवल बेकार बैठने की जगह नहीं बल्कि अमल का मुक़ाम है, केवल इतना अंतर है कि इस जहान में इन्सान से गुनाह भी सादर हो जाता है परंतु वहां कोई बुरा फ़ेअल सरज़द नहीं होगा

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः अल-हज की आयत 24 और 25 की तफ़सीर में फ़रमाते हैं

इससे यह मुराद नहीं कि माद्दी सोने के कंगन उन को पहनाए जाऐंगे। माद्दी सोना तो वह छोटी सी वस्तु है जिसको इस दुनिया में भी मोमिन फेंक देता है। अगले जहां में इस को क्या मज़ा आएगा। अतः यह एक तमसीली ज़बान है और कंगन से मुराद ज़ीनत का सामान है और सोने से मुराद यह है कि वह सामान तबाह होने वाला नहीं होगा क्योंकि सोने को ज़ंग नहीं लगता और मोती से भी यही मुराद है कि वह सामान इन्सान की तबियत में एक चमक और मुलायम पैदा करेंगे जैसा कि मोती होता है। وَلِبَاسُہُمۡ فِیۡہَا حَرِیۡرٌ में बताया कि अगले जहान में उन्हें ऐसा तक़्वा मिलेगा जिसके इख़्तेयार करने में उन्हें कोई तकलीफ़ नहीं होगी। क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तक़्वा भी वस्त्र से मुशाबहत रखता है जैसा कि आता है وَلِبَاسُ التَّقۡوٰی ذٰلِکَ خَیۡرٌ (सूरः आराफ़ : 3) परंतु फ़रमाता है कि इस दुनिया में तो तक़्वा का वस्त्र पहनने के लिए बड़ी जद्द-ओ-जहद करनी पड़ती है और तकलीफ़ उठानी पड़ती है लेकिन अगले जहान में तक़्वा का वस्त्र रेशम के मुशाबेह होगा अर्थात उस को इख़्तेयार करने के लिए तकलीफ़ नहीं उठानी पड़ेगी बल्कि वह निहायत आरामदेह होगा और तबीयत ख़ुद बख़ुद ही तक़्वा की तरफ़ मायल होगी उसे मजबूर नहीं करना पड़ेगा

फिर फ़रमाता है कि केवल वस्त्र ही नहीं उनकी ज़बान भी बड़ी अच्छी होगी और तौर तरीक़ा भी अच्छा होगा यहां तक कि इन के हम-साए और अल्लाह तआला भी उन के तौर-तरीक़े की तारीफ़ करेगा इस से भी मालूम होता है कि जन्नत केवल बेकार

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला बड़ा हया वाला है बड़ा करीम और सख़ी है, जब बंदा उसके हुज़ूर दोनों हाथ बुलंद करता है तो वह उनको ख़ाली और नाकाम वापस करने से शरमाता है (अल् हदीस)

इस आयत में जब अल्लाह तआला ने यह कहा कि "मेरे बंदे" तो उन बंदों से मुराद है जो हक़ीक़त में अल्लाह तआला का अबद बनना चाहते हैं, हक़ीक़ी तौबा करना चाहते हैं और करते हैं

वह लोग ख़ुद अपना जायज़ा ले लें जो कहते हैं कि हमने बड़ी दुआ की, बहुत सज्दे किए, बहुत नफ़ल पढ़े लेकिन हमारे मक़सद हासिल नहीं हुए क्या उन्होंने अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल कर लिया? क्या उन्होंने अपनी ईमानी हालत को इस मयार पर पहुंचा दिया कि कोई तूफ़ान उन्हें हिला न सके

"जो शख़्स ईमान लाता है उसी को इर्फ़ान दिया जाता है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"दुआ ख़ुदा तआला की हस्ती का ज़बरदस्त सबूत है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"दुआ ख़ुदा से आती है और ख़ुदा की तरफ़ ही जाती है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

अक्सर लोग पूछते हैं कि किस तरह पता चले कि दुआ क़बूल हुई है और अल्लाह तआला राज़ी हुआ है? उनको यह जवाब है कि पाक तबदीली पैदा होती है

"हुसूल-ए-फ़ज़ल का निकट मार्ग दुआ है और दुआ कामिल के लवाज़मात ये हैं कि इस में दर्द हो, इज़्तेराब और पीढ़ा हो
जो दुआ आजिज़ी, इज़्तेराब और दर्द भरे दिल्ली से भरी हुई हो वह ख़ुदा तआला के फ़ज़ल को खींच लाती है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"दुआ एक इस्तक़लाल और मुदावमत को चाहती है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"याद रखो दुआ एक मौत है और जैसे मौत के वक़्त-ए-इज़्तिराब और बेक़रारी होती है इसी तरह पर्दा के लिए भी वैसा ही इज़तिराब और जोश होना ज़रूरी है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"सबसे अव्वल और ज़रूरी दुआ यह है कि इन्सान अपने आपको गुनाहों से पाक साफ़ करने की दुआ करे, सारी दुआओं का असल और भाग यही है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"सायल का काम नहीं है कि वह तुरंत अता न किए जाने पर शिकायत करे और बदज़नी करे बल्कि इस्तक़लाल और सब्र से मांगता चला जाए" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"दुआ के अंदर क़बूलियत का असर उस वक़्त पैदा होता है जब वह इंतेहाई दर्जा के इज़्तेरार तक पहुंच जाती है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"दुआ उम्दा वस्तु है, अगर तौफ़ीक़ हो तो ज़रीया मग़फ़िरत का हो जाती है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"बड़ी मुश्किल यह है कि लोग दुआ की हक़ीक़त और हालत से महज़ नावाक़िफ़ हैं"
और इसी वजह से इस ज़माना में बहुत से लोग इस से मुनकिर हो गए हैं क्योंकि वह इन तासीरात को नहीं पाते" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)
"जबकि दूसरी वस्तुओं में तासीरात मौजूद हैं तो क्या वजह है कि बातिनी दुनिया में तासीरात न हों" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"बड़ा ही ख़ुश-क़िस्मत वह व्यक्ति है जिसको दुआ पर ईमान है क्योंकि वह अल्लाह तआला की अजीब दर अजीब क़ुदरतों को देखता है और ख़ुदा तआला को देखकर ईमान लाता है कि वह क़ादिर करीम ख़ुदा है"

"नमाज़ और दुआ जब तक इन्सान ग़फ़लत और कसल से ख़ाली न हो तो वह क़बूलियत के काबिल नहीं हुआ करती" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"यह बात बिल्कुल नामुमकिन है कि इन्सान अल्लाह तआला का बिल्कुल मुतीअ हो और फिर उसकी दुआ क़बूल न हो, हाँ यह ज़रूरी है कि इस के पुनः शरायत को कामिल तौर पर अदा करे"

"वे लोग इस मुक़ाम पर ज़रा ख़ास ग़ौर करें जो कहते हैं कि जब दुआ हुई तो अस्बाब की क्या ज़रूरत है
वे नादान सोचें कि दुआ बजा-ए-ख़ुद एक मख़फ़ी सबब है जो दूसरे अस्बाब को पैदा कर देता है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"अस्बाब से काम न लेना और निरी दुआ से काम लेना यह दुआ के आदाब से न-वाक़िफ़ी है और ख़ुदा तआला को आज़माना है और निरे अस्बाब पर गिरे रहना और दुआ को कोई वस्तु न समझना यह नास्तिकता है"

रमज़ान का अब आख़िरी अशरा शुरू हो रहा है इस में विशेषता हमें अल्लाह तआला के हुक्मों को अपना लाहे अमल बनाते हुए, ईमान में मज़बूत होते हुए

रातों को उठकर उसके हुज़ूर झुकते हुए उसके क़ुरब को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए ताकि हम इस हिदायत को पाने वाले हों जिस पर अल्लाह तआला हमें चलाना चाहता है।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पर मआरिफ़ इर्शादात की रोशनी में दुआ और इस की क़बूलियत की हिक्मत और फ़िलोसफ़ी का वर्णन

जमात की तरक़्क़ी, यमन और पाकिस्तान में पाबंद-ए-सलासिल असीरान-ए-राह़-ए-मौला और मज़लूम फ़लस्तीनियों के लिए की तहरीक

अल्लाह तआला ही है जो इन मज़लूमों को इन ज़ालिमों से नजात दे और हमें भी इन मज़लूमों के लिए दुआ का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 मार्च 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ

(अल् बकरः : 187)

और जब मेरे बंदे तुझ से मेरे विषय में प्रश्न करें तो निश्चित में क़रीब हूँ। मैं दुआ करने वाले की दुआ का जवाब देता हूँ जब वह मुझे पुकारता है। अतः चाहिए कि वह भी मेरी बात पर लब्बैक कहें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वह हिदायत पाएं।

अल्लाह तआला ने यह आयत रोज़ों के अहकाम के साथ रखी है बल्कि कह सकते हैं कि बीच में रखी है जिससे पता चलता है कि दुआओं का रमज़ान और रोज़ों के साथ भी ख़ास ताल्लुक़ है। हर मुस्लमान इस बात को अच्छी तरह जानता है कि रमज़ान और दुआओं का एक ख़ास ताल्लुक़ है। तभी तो रमज़ान में विशेषता नमाज़ों, नवाफ़िल, तहज्जुद, तरावीह इत्यादि की तरफ़ विशेष तवज्जा पैदा होती है। हर हक़ीक़ी मुस्लमान को यह एहसास है कि इन दिनों में ख़ुदा तआला के ख़ास प्यार की नज़र अपने बंदों पर होती है। अल्लाह तआला की तो आम दिनों में भी अपने बंदों पर प्यार की नज़र होती है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं बंदे के गुमान के मुताबिक़ उस से सुलूक करता हूँ। जिस वक़्त बंदा मुझे याद करता है मैं उस वक़्त उस के साथ होता हूँ। अगर वे मुझे अपने दिल में याद करे तो मैं उसे अपने दिल में याद करता हूँ। अगर वह मेरा ज़िक्र महफ़िल में करे तो मैं उस का वर्णन महफ़िल में करूँगा। अगर वह मेरी तरफ़ एक बालिशत भर आए तो मैं उसकी तरफ़ एक हाथ जाऊँगा। अगर वह मेरी तरफ़ एक हाथ आएगा तो मैं उस की तरफ़ दो हाथ जाऊँगा। अगर वह मेरी तरफ़ चल कर आए तो मैं उसकी तरफ़ दौड़ कर आऊँगा।

(सही अल् बुख़ारी, किताब अल् तौहीद, बाब ...ما يذكر فى الذات والنعوت हदीस : 7405)

अतः अल्लाह तआला तो आम हालात में भी बंदे से यह सुलूक फ़रमाता है और जब रमज़ान का महीना हो जो विशेषता अल्लाह तआला की तरफ़ बढ़ने का महीना है, पूरा माहौल ही इन्सान को इस हालत में करने वाला होता है कि वह अल्लाह तआला को याद करे तो फिर अल्लाह तआला किस क़दर मेहरबान होगा इस का हम अंदाज़ा भी नहीं कर सकते लेकिन शर्त यह है कि ये सब बातें दिल की गहराई से हों। ईमान पर मज़बूत होते हुए हों न कि सतही तौर पर।

फिर अल्लाह तआला की अपने बंदों पर मेहरबानी की मिसाल देते हुए एक अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यूं फ़रमाया कि अल्लाह तआला बड़ा हया वाला है। बड़ा करीम और सख़ी है। जब बंदा उस के हुज़ूर दोनों हाथ बुलंद करता है तो वह उनको ख़ाली और नाकाम वापस करने से शरमाता है।

सिदक़-ए-दिल से मांगी हुई दुआ को रद्द नहीं करता। क़बूल कर लेता है।

(सुंन अबू दाऊद, बाब तफ़रीअ अबवाब अल् वित्र, बाब दुआ हदीस : 1488)

अतः यह हालत उस वक़्त मयस्सर होती है जब हाथ बुलंद हों। जब सिदक़-ए-दिल से इन्सान मांगे और सिदक़-ए-दिल से मांगने के लिए ज़रूरी है कि पिछले गुनाहों से मुकम्मल बचने और हक़ीक़ी तौबा का अह्द करके अल्लाह तआला की तरफ़ आए। अतः हम बाअज़ दफ़ा जल्द-बाज़ी में कह देते हैं कि हमने दुआ की और क़बूल नहीं हुई लेकिन अपनी हालत को नहीं देखते कि कितना सिदक़-ए-दिल है, कितनी सच्चाई से अल्लाह तआला की मुहब्बत में हम बढ़ रहे हैं। कितनी सच्चाई से हम पिछले गुनाहों की माफ़ी मांगते हुए आइन्दा गुनाहों से बचने और अल्लाह तआला के बताए हुए तरीक़ पर चलने का अह्द कर रहे हैं।

अल्लाह तआला को धोखा नहीं दिया जा सकता। वह तो हमारे दिल का हाल जानता है। हमारे पाताल तक से वाक़िफ़ है।

अतः अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़्ब करने के लिए उस के खुले दर में दाख़िल होने के लिए उसके लवाज़मात भी पूरे करने होंगे। अल्लाह तआला की मेहरबानी और शफ़क़त बंदों पर इस क़दर है कि हर साल विशेषता रमज़ान में हमें ला कर यह अवसर फ़राहम करता है कि अगर आम दिनों में भूल चूक हो गई है तो अब इस महीने की बरकात से फ़ायदा उठा कर मेरी तरफ़ आओ और मेरे बंदों में शामिल हो जाओ। अल्लाह तआला विशेषता इन दिनों में अपने बंदों पर प्यार की नज़र डालना चाहता है। भोले भटकों को राह़-ए-रास्त पर लाना चाहता है। ख़ास माहौल की वजह से बंदों के इबादत के मयार बुलंद करना चाहता है।

इस आयत में जब अल्लाह तआला ने यह कहा कि "मेरे बंदे" तो उन बंदों से मुराद है जो हक़ीक़त में अल्लाह तआला का अबद बनना चाहते हैं। हक़ीक़ी तौबा करना चाहते हैं और करते हैं।

अतः यह हक़ीक़ी बंदे बनने की हमें कोशिश करनी चाहिए और रमज़ान में इस का क़ुरब पाने और हक़ीक़ी बंदे बनने का ख़ास माहौल मयस्सर है। अल्लाह तआला की मुहब्बत में हम बढ़ने की कोशिश करेंगे तभी हम उस के हक़ीक़ी बंदे बन सकते हैं और जब यह हालत होगी तो फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है मेरे ऐसे बंदों और मेरे से इशक़ करने वालों को कह दो कि मैं उनकी दुआओं को सुनता भी हूँ और जवाब भी देता हूँ।

अतः हमारी दुआएं केवल अपनी ज़ाती अग़राज़ के लिए नहीं होनी चाहिऐं बल्कि अल्लाह तआला का क़ुरब हासिल करने और उस की मुहब्बत हासिल करने के लिए होनी चाहिए। अल्लाह तआला की मुहब्बत के हसूल के लिए हम उसकी तरफ़ एक बालिशत, एक हाथ और तेज़ चल कर जाने वाले होंगे तो फिर अल्लाह तआला हमारी

तरफ़ इस से बढ़कर तवज्जा फ़रमाएगा और दौड़ कर हमारी मदद को आएगा, दुआओं को सुनेगा लेकिन अल्लाह तआला ने वाज़िह फ़र्मा दिया कि यह ज़बानी मुहब्बत के दावे नहीं हैं जो तुम्हें यह मुक़ाम अता कर देंगे। नहीं, बल्कि तुम्हें मेरी बातों को मानना पड़ेगा। मेरे अहकाम पर अमल करना पड़ेगा। हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल-ईबाद अदा करने पड़ेंगे फिर उस के साथ ईमान में मज़बूती भी पैदा करनी होगी। ऐसा ईमान जो क भी मुतज़लज़ल न हो। जब यह होगा तो फिर ही मेरे बंदों में, हक़ीक़ी बंदों में शुमार हो सकते हो। अब वे लोग ख़ुद अपना जायज़ा ले लें जो कहते हैं कि हमने बड़ी दुआ की, बहुत सज्दे किए, बहुत नफ़ल पढ़े लेकिन हमारे उद्देश्य हासिल नहीं हुए। क्या उन्होंने अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल कर लिया? क्या उन्होंने अपनी ईमानी हालत को इस मयार पर पहुंचा दिया कि कोई तूफ़ान उन्हें हिला न सके? अक्सर ऐसे लोगों का यह हाल है कि बजाय उसके कि अपने महबूब की ख़ाहिशात को पूरा करें, अपनी ज़रुरियात की फ़हरिस्त पेश कर के फिर कहते हैं कि अगर अल्लाह तआला ने यह पूरा न किया तो दुआओं का क्या फ़ायदा।

फिर ख़ुदा तआला के वजूद पर, दुआओं की हिक्मत पर, दुआओं की क़बूलियत प रप्रश्न करने लग जाते हैं। यह तो अल्लाह तआला के बंदों की निशानी नहीं होती। यह तो उन लोगों की निशानी नहीं है जिनके हाथ को अल्लाह तआला ख़ाली वापस लौटाने से शरमाता है। अतः हमें अल्लाह तआला के बारे में प्रश्न करने से पहले अपनी हालत का जायज़ा लेना चाहिए कि किस हद तक हम अल्लाह तआला की बातों को मान कर इस पर अमल कर रहे हैं।

किस हद तक हम अपने ईमान में मज़बूत हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बारे में अपने लिटरेचर में मुख़्तलिफ़ किताबों में इर्शादात फ़रमाए हैं। दुआ की हिक्मत, उसकी क़बूलियत की हिक्मत और फ़िलोसफ़ी बड़ी तफ़सील से वर्णन की है और वह मयार बताए हैं जब दुआ को हक़ीक़ी दुआ कहा जा सकता है। इस हवाले से मैं आप अलैहिस्सलाम के कुछ हवाले भी पेश करूँगा कि अल्लाह तआला के हक़ीक़ी बंदे कौन हैं?

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है "जब मेरे बंदे मेरे बारे में प्रश्न करें कि ख़ुदा के वजूद पर दलील क्या है? इस का यह उत्तर है कि मैं बहुत नज़दीक हूँ अर्थात कुछ बड़े दलायल की हाजत नहीं। मेरा वजूद निहायत अक़्रब तरीक़ से समझ आ सकता है और निहायत आसानी से मेरी हस्ती पर दलील पैदा होती है और वह दलील यह है कि जब कोई दुआ करने वाला मुझे पुकारे तो मैं उस की सुनता हूँ और अपने इलहाम से इस की कामयाबी की बशारत देता हूँ जिस से न केवल मेरी हस्ती पर यक़ीन आता है बल्कि मेरा क़ादिर होना भी बपायह यक़ीन पहुंचता है लेकिन चाहिए कि लोग ऐसी हालत तक़्वा और ख़ुदातरसी की पैदा करें कि मैं उनकी आवाज़ सुनूँ। "यह बड़ी अहम शर्त है। सुनता हूँ लेकिन पहले तक़्वा की हालत पैदा करो, ख़ुदातरसी की पैदा करो फिर मैं आवाज़ सुनूँगा और कि" नीज़ चाहिए कि वह मुझ पर ईमान लावें और क़बल उसके जो उनको मार्फत-ए-तामा मिले इस बात का इक़रार करें कि ख़ुदा मौजूद है और समस्त ताक़तें और क़ुदरतें रखता है।" अर्थात अल्लाह तआला की यह मुकम्मल मार्फ़त मिल जाए। दुआओं की क़बूलियत से उसके निशानात भी मिल जाएं लेकिन इस से पहले इस बात पर यक़ीन और ईमान होना चाहिए कि ख़ुदा मौजूद है। पहले अल्लाह तआला पर ईमान मज़बूत करो। ईमान बिलग़ैब हो और फिर यह है कि "वह समस्त ताक़तें और क़ुदरतें रखता है क्योंकि जो शख़्स ईमान लाता है उसी को इर्फ़ान दिया जाता है।"

(अय्याम-ए-सुलह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 14 पृष्ठ 260-261)

ईमान पहले होगा तो फिर इर्फ़ान भी मिलेगा। अतः ईमान का आला मयार होगा तो फिर ही क़बूलियत-ए-दुआ के नज़्ज़ारे भी होंगे। यह नहीं कि किसी इबतेला से इन्सान डांवां डोल हो जाए। यह दलील अल्लाह तआला ने अपने होने की बताई है कि दुआ सुनता हूँ। अतः अगर दुआ सुनी नहीं गई तो इस ताल्लुक़ में कमी है जो दो दोस्तों में होता है और इस कमी को पूरा करने का तरीक़ भी बता दिया कि तक़्वा की हालत पैदा करो। इस बात पर कामिल यक़ीन हो और इसका इक़रार करो कि ख़ुदा मौजूद है। इसके वजूद पर ईमान बिलग़ैब हो और तीसरी बात यह है कि अल्लाह तआला पर कामिल यक़ीन हो कि वे तमाम ताक़तें और क़ुव्वतें रखता है। इस के इलावा और कोई नहीं जो तमाम ताक़तें रखता हो। अतः यह मयार दुआ की क़बूलियत के कम से कम मयार हैं।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "अगर मेरे बंदे मेरे वजूद से प्रश्न करें कि क्योंकर उसकी हस्ती साबित है और क्योंकर समझा जाए कि ख़ुदा है? तो इस का उत्तर यह है कि मैं बहुत ही नज़दीक हूँ। मैं अपने पुकारने वाले को जवाब देता हूँ और जब वे मुझे पुकारता है तो मैं उसकी आवाज़ सुनता हूँ और इससे हमकलाम होता हूँ। अतः चाहिए कि अपने बारे में ऐसे बनावें कि मैं उनसे हमकलाम हो सकूँ।" अर्थात अपनी हालतों को पहले ठीक करे जो अल्लाह तआला से हमकलाम हो" और मुझ पर कामिल ईमान लावें ता उनको मेरी राह मिले।" (लैक्चर लाहौर, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 159) हिदायत की राह तभी मिलेगी।

अतः यह यक़ीन-ए-कामिल पैदा करने की ज़रूरत है। इस तरीक़ पर अमल करने और उन शरायत पर चलने की ज़रूरत है जो पहले वर्णन हुई हैं। मैंने अभी वर्णन किया हैं अर्थात नंबर एक हालत-ए-तक़्वा हो और ख़ुदातरसी पैदा हो। नंबर दो इस बात पर कामिल ईमान हो कि ख़ुदा है। तजुर्बा है या नहीं ईमान बिलग़ैब है। कामिल ईमान है कि ख़ुदा है और नंबर तीन इस बात पर कामिल यक़ीन कि वह कामिल ताक़तें और क़ुदरतें रखता है। यह नहीं कि कोई काम नहीं हुआ तो कह दिया उसकी ताक़त नहीं है और शिकवा शुरू हो गया। इस बात पर यक़ीन हो कि वह कामिल ताक़तें और क़ुदरतें रखता है।

अतः दुआओं के क़बूल न होने से मायूसी की बातें करने वाले और ख़ुदा तआला की ज़ात पर शक करने वाले पहले अपने जायज़े लें कि क्या ये तीन हालतें उनमें हैं और जो भी हालात हों वह उस पर क़ायम रहेंगे। यह हो ही नहीं सकता कि ईमानकी यह हालत हो और फिर अल्लाह तआला की ज़ात पर शक भी हो।

फिर एक जगह आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "وَاِذَا سَاَلَکَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ (अल् बक़रः : 187) के यही अर्थ हैं कि अगर प्रश्न हो कि ख़ुदा का इलम क्योंकर हुआ तो जवाब यह है कि इस्लाम का ख़ुदा बहुत क़रीब है। अगर कोई उसे सच्चे दिल से बुलाता है तो वह जवाब देता है। दूसरे फ़िर्क़ों के ख़ुदा क़रीब नहीं हैं" अर्थात दूसरे मज़ाहिब के "बल्कि इस क़दर दूर हैं कि उनका पता ही नदारद। आला से आला ग़रज़ आबिद और परिस्तार की यही है कि उस का क़ुरब हासिल हो और यही माध्यम है एक सही आबिद की आला ग़रज़ यही होनी चाहिए कि उस को अल्लाह तआला का क़ुरब हासिल हो। उस की मुहब्बत दिल में पैदा हो "जिससे उस क हस्ती पर यक़ीन हासिल होता है। اُجِیْبُ دَعْوَۃَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ (अल् बक़रः : 187) के भी यही माने हैं कि वह जवाब देता है गूँगा नहीं है। दूसरे समस्त दलायल उसके आगे कुछ नहीं हैं। कलाम एक ऐसी शैय है जो कि दीदार के क़ायम मक़ाम है। (मल्फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 107 ऐडीशन 1984 ई.) अतः सच्चे दिल से बुलाना ज़रूरी है और सच्चे दिल से बुलाना क्या है कि उस की बात मानी जाए और इस पर ईमान मज़बूत हो।

फिर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "जब मेरा बंदा मेरी विषय में प्रश्न करे अतः में बहुत ही क़रीब हूँ। मैं पुकारने वाले की दुआ को क़बूल करता हूँ जब वह पुकारता है।" फ़रमाया कि "बाअज़ लोग उसकी ज़ात पर शक करते हैं। अतः मेरी हस्ती का निशान यह है कि तुम मुझे पुकारो और मुझसे माँगो। मैं तुम्हें पुकारूँगा और जवाब दूँगा और तुम्हें याद करूँगा जैसा कि हदीस में भी आया है। अल्लाह तआला कहता है मैं तुम्हें याद करता हूँ और तुम मुझे याद करते हो। दिल में या महफ़िल में। फ़रमाया कि "अगर यह कहो कि हम पुकारते हैं पर वह जवाब नहीं देता।" यह प्रश्न उठता है पहले भी वर्णन हो चुका कि हम पुकारते हैं जवाब नहीं देता "तो देखो' फ़रमाया कि "तो देखो कि तुम एक जगह खड़े हो कर एक ऐसे शख़्स को जो तुमसे बहुत दूर है पुकारते हो और तुम्हारे अपने कानों में कुछ नुक़्स है।"

अतः पहली बात यह है कि दूर खड़े होने से तो फ़ायदा कोई नहीं। क़रीब आओ और मुहब्बत से क़ुरबत मिलेगी। वह मुहब्बत अल्लाह तआला की दिल में पैदा करो। अपने कानों में कुछ नुक़्स है। कमज़ोर ईमान भी कानों में नुक़्स डालना ही है। इस कमज़ोर ईमान को दूर करके ईमान को मज़बूत करो फिर क़ुरबत मिलेगी वह शख़्स तो तुम्हारी आवाज़ सुनकर तुमको जवाब देगा" आप ने मिसाल दी कि दूर से आवाज़ें दे रहे हो, तुम्हारी हल्की सी आवाज़ भी इस को पहुंच गई या वाज़ह भी पहुंच गई तो वह तुम्हें जवाब देगा "परंतु जब वह दूर से जवाब देगा और वह दूर से जवाब देगा" तो तुम बबाइस बहरापन के सुन नहीं सकोगे।

अल्लाह तआला जवाब दे भी दे तो क्योंकि तुम्हारे ईमान में मज़बूती नहीं है, तुम्हारी मुहब्बत में कमी है, उसकी बातों पर अमल नहीं कर रहे तो ये तुम्हारे कानों का बहरापन है जिसकी वजह से तुम उसकी आवाज़ को सुन नहीं सकते। अब अल्लाह तआला जवाब दे भी दे तो तुम यही कहोगे उसने जवाब नहीं दिया हालाँकि उसने जवाब दिया था कि तुमने अगर ऊंची आवाज़ सुननी है तो अपनी हालत को बेहतर करो। लेकिन तुम बहरापन की वजह से वह आवाज़ भी नहीं सुन रहे।

फ़रमाया कि "जूँ-जूँ तुम्हारे दमध्य पर्दे और हिजाब और दूरी और दूर होती जाएगी तो तुम ज़रूर आवाज़ को सुनोगे।" तक़्वा में बढ़ते जाएंगे तो आवाज़ को सुनने की तरफ़ तवज्जा पैदा होती जाएगी। फ़रमाया कि "जब से दुनिया की पैदाइश हुई है इस बात का सबूत चला आता है कि वह अपने ख़ास बंदों से हमकलाम होता है। अगर ऐसा नहीं होता

तो रफ़्ता-रफ़्ता बिल्कुल यह बात नाबूद हो जाती कि उसकी कोई हस्ती है भी।

अतः ख़ुदा तआला की हस्ती के सबूत का सबसे ज़बरदस्त माध्यम यही है कि हम उसकी आवाज़ को सुन लें या दीदार या गुफ़्तार।' कई दफ़ा अल्लाह तआला दिखा देता है और बाअज़ दफ़ा केवल आवाज़ सुनाता है।" अतः आजकल का गुफ़्तार क़ायम मक़ाम है दीदार का' आजकल के जो अल्लाह तआला की तरफ़ से इशारे मिल जाएं वही अल्लाह तआला को देखने के क़ायम मक़ाम हैं" हाँ जब तक ख़ुदा के और उसके सायल के दरमयान कोई हिजाब है उस वक़्त तक हम सुन नहीं सकते।" गुफ़्तार भी अगर है तो सुन नहीं सकते क्योंकि हिजाब है, पर्दे हैं "जब दरमयानी पर्दा उठ जावेगा तो उसकी आवाज़ सुनाई देगी।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 227 ऐडीशन 1984 ई.) अतः क़रीब आओ। ख़ालिस मुहब्बत पैदा करो तो यह क़ुरबत मिलेगी। हिजाब दूर होगा। जवाब तो देता है। अल्लाह तआला कहता है मैं देता हूँ तुम सुन नहीं सकते और पहला जवाब यह है कि मुहब्बत में बढ़ो। मुहब्बत में बढ़ोगे तो बहरापन भी दूर हो जाएगा।

फिर आप अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं कि "दुआ ख़ुदा तआला की हस्ती का ज़बरदस्त सबूत है इसलिए ख़ुदा तआला एक जगह फ़रमाता وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ (अल् बकरः : 187) अर्थात जब मेरे बंदे तुझसे प्रश्न करें कि ख़ुदा कहाँ है और इस का क्या सबूत है तो कह दो कि वह बहुत ही क़रीब है और इस का सबूत यह है कि जब कोई दुआ करने वाला मुझे पुकारता है तो मैं उसे जवाब देता हूँ यह जवाब कभी सच्चे स्वप्न के माध्यम से मिलता है।" सच्ची ख़्वाबें आजाती हैं। उनके ज़रीये जवाब मिल जाता है "और कभी कशफ़ और इलहाम के वास्ते से और इलावा इन दुआओं के ज़रीया ख़ुदा तआला की क़ुदरतों और ताक़तों का इज़हार होता है।"इस के इलावा भी ख़ुदा तआला की क़ुदरतों और ताक़तों का इज़हार दुआओं के ज़रीया से हो जाता है। ख़ुद बख़ुद पता लग जाता है कि अल्लाह तआला ने हमारी आवाज़ सुन ली, हमारी दुआ सुन ली और उसके नतीजे में ये बातें पैदा हो रही हैं। फ़रमाया "और मालूम होता है कि वह ऐसा क़ादिर है कि मुश्किलात को हल कर देता है। उद्देश्य दुआ बड़ी दौलत और ताक़त है और क़ुरआन शरीफ़ में जा-ब-जा उसकी तरग़ीब दी है और ऐसे लोगों के हालात भी बताए हैं जिन्हों ने दुआ के ज़रीया अपनी मुश्किलात से नजात पाई। अम्बिया अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी की जड़ और उनकी कामयाबियों का असल और सच्चा ज़रीया यही दुआ है। अतः मैं नसीहत हूँ" फ़रमाते हैं कि"मैं नसीहत करता हूँ कि अपनी ईमानी और अमली ताक़त को बढ़ाने के वास्ते दुआओं में लगे रहो। दुआओं के ज़रीया से ऐसी तबदीली होगी जो ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से ख़ातिमा बिलख़ैर हो जावेगा।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 268-269 ऐडीशन 1984 ई.)

यह पुरानी बातें नहीं हैं। आज के ज़माने में भी इसकी मिसालें मिलती हैं। बहुत से लोग हैं जो अपनी दुआओं की क़बूलियत के वाक़ियात लिखते हैं। मुख़्तलिफ़ वक़्तों में मैं वाक़ियात बताता भी रहता हूँ। ख़ुदा के वजूद पर रिव्यू आफ़ रिलीजिंज़ ने प्रोग्राम किया था इस में भी कई लोगों ने दुआ की क़बूलियत के वाक़ियात वर्णन किए बल्कि अल्लाह तआला इस क़दर नवाज़ता है कि बाअज़ दफ़ा ईमान की मज़बूती के लिए ही दुआओं को क़बूल करके, उनको क़बूलियत का दर्जा दे के पुकारने वाले की आवाज़ सुन कर फिर अपनी क़ुदरत का जलवा दिखा देता है। जो कमज़ोर ईमान पर हैं उनको भी बाअज़ दफ़ा ईमान में मज़बूती पैदा करने के लिए दिखा देता है। ऐसे भी सैंकड़ों लोग हैं जो मुझे ख़त लिखते रहते हैं। मेरे पास मुझे आ के बताते हैं।

दुआ की मार्फ़त की हक़ीक़त वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं : "मार्फ़त फ़ज़्ल के ज़रीया से हासिल होती है और फिर फ़ज़्ल के ज़रीया से ही बाक़ी रहती है। फ़ज़्ल मार्फ़त को निहायत मुसफ़्फ़ा और रोशन कर देता है और हिजाबों को दरमयान से उठा देता है और नफ़्स-ए-अम्मारा के लिए गर्द-ओ-गुबार को दूर कर देता है और रूह को ताकत और ज़िंदगी बख़्शता है और नफ़्स-ए-अम्मारा को अमारगी के ज़िंदान से निकालता है।" अर्थात नफ़्स-ए-अम्मारा को जो गुनाहों की तरफ़ उभारने वाला नफ़्स है उस को इस क़ैद से निकालता है, अपने नफ़्स की क़ैद से निकालता है "और बद ख़्वाहिशों की पलीदी से पाक करता है और नफ़्सानी जज़्बात के बड़े सेलाब से बाहर लाता है।" जिस तरह पानी का सेलाब आता है इस तरह नफ़्सानी जज़्बात का एक सेलाब है, गुनाहों का सेलाब है इस से इन्सान को बाहर निकालता है।" तब इन्सान में एक तबदीली पैदा होती है और वह भी गंदी ज़िंदगी से स्वभाविक बेज़ार हो जाता है कि बाद उसके पहली हरकत जो फ़ज़्ल के ज़रीया से रूह में पैदा होती है वह दुआ है। यह ख़्याल मत करो कि हम भी हर-रोज़ दुआ करते हैं और तमाम नमाज़ दुआ ही है जो हम पढ़ते हैं क्योंकि वह दुआ जो मार्फ़त के बाद और फ़ज़्ल के ज़रीया से पैदा होती है वह और रंग और कैफ़ीयत रखती है।" यह ज़ाहिरी नमाज़ें हमने पढ़ लीं, आए और जल्दी जल्दी पाँच मिनट में नमाज़ पढ़ लें। फ़ारिग़ हो गए। ये नमाज़ें नहीं। ये दुआएं नहीं। इसके लिए मार्फ़त चाहिए और वह जो मार्फ़त पैदा हो तो फिर उस दुआ का मज़ा ही और होता है। उस नमाज़ का मज़ा ही और होता है।

फ़रमाया पैदा होती है और वह और रंग और कैफ़ीयत रखती है।" वह फ़ना करने वाली चीज़ है। वह गुदाज़ करने वाली आग है। वह रहमत को खींचने वाली एक मक़-नातीसी कशिश है। वह मौत है पर आख़िर को ज़िंदा करती है। वह एक तुंद सेल है पर आख़िर को क्षति बन जाती है।" एक सेलाब है लेकिन वह सेलाब भी क्षति बन जाता है और मंज़िल-ए-मक़्सूद तक पहुंचा देता है।" हर एक बिगड़ी हुई बात इस से बन जाती है और हर एक ज़हर आख़िर इस से तिरयाक़ हो जाता है।" (लैक्चर स्यालकोट, रुहानी ख़ज़ायन, बहग 20, पृष्ठ 222) अतः ख़ुश-क़िस्मत हैं हम में से वे जो इस मार्फ़त को हासिल करने की कोशिश करते हैं।

फिर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "दुआ ख़ुदा से आती है और ख़ुदा की तरफ़ ही जाती है। दुआ से ख़ुदा ऐसा नज़दीक हो जाता है। जैसा कि तुम्हारी जान तुमसे नज़दीक है। दुआ की पहली नेअमत यह है कि इन्सान में पाक तबदीली पैदा होती है।"

अक्सर लोग पूछते हैं कि किस तरह पता चले कि दुआ क़बूल हुई है और अल्लाह तआला राज़ी हुआ है? उनको यह जवाब है कि पाक तबदीली पैदा होती है।

अल्लाह तआला से ताल्लुक़ में इन्सान उस वक़्त बढ़ेगा जब पाक तबदीली पैदा होगी। जब पाक तबदीली पैदा होगी तो दुआओं की क़बूलियत के निशान भी मिलेंगे। फ़रमाया कि "इन्सान में पाक तबदीली पैदा होती है। फिर उस तबदीली से ख़ुदा भी अपने सिफ़ात में तबदीली करता है और उसके सिफ़ात ग़ैर मुतबद्दल हैं परंतु तबदीली याफ़ताह के लिए उसकी एक अलग तजल्ली है जिसको दुनिया नहीं जानती।" यह नहीं कि अल्लाह तआला की कोई सिफ़ात तबदील हो जाती हैं। वह नहीं बदली जा सकतीं लेकिन ऐसे तबदीली पैदा करने वाले के लिए अल्लाह तआला ऐसे हालात पैदा कर देता है कि उस को लगता है कि जिस तरह सिफ़ात में कोई तबदीली हो गई हालाँकि सिफ़ात वही हैं लेकिन इस का इज़हार अब शुरू हो गया। फ़रमाया कि "गोया वह और ख़ुदा है हालाँकि और कोई ख़ुदा नहीं परंतु नई तजल्ली नए रंग में इस को ज़ाहिर करती है तब इस ख़ास तजल्ली की शान में इस तबदील याफ़ताह के लिए वह काम करता है जो दूसरों के लिए नहीं करता। यही वह ख़वारिक़ है।"

(लैक्चर स्यालकोट, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 223)

फिर आप अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं : "अल्लाह जल्ला शाना ने जो दरवाज़ा अपनी मख़लूक़ की भलाई के लिए खोला है वह एक ही है अर्थात दुआ। जब कोई शख़्स दर्द और पीढ़ा से इस दरवाज़ा में दाख़िल होता है तो वह मौलाए करीम उसको पाकीज़गी-ओ-तहारत की चादर पहना देता है और अपनी अज़मत का ग़लबा इस पर इस क़दर कर देता है कि बेजा कामों और नाकारा हरकतों से वह कोसों भाग जाता है (मल् फ़ूज़ात, जभाग 5 पृष्ठ 438 ऐडीशन 1984 ई.) बहुत ज़्यादा दूर, मीलों दूर हो जाता है। अतः हक़ीक़ी दुआ की यह विशेषता है कि फ़ुज़ूल कामों और लग़वि-यात से वह दूर हो जाता है। पाकीज़गी उसकी फ़ित्रत में आ जाती है। वह केवल दुनियावी उद्देश्य के लिए दुआ नहीं करता बल्कि अपने दीन और तक़्वा में बढ़ने के लिए भी दुआ करता है। ख़ुदा तआला की मुहब्बत मांगने के लिए दुआ करता है और यही एक हक़ीक़ी मोमिन की निशानी है। यही ईमान में कामिल होने की निशानी है ईमान में बढ़ने की निशानी है।

फिर दुआ की गहराई को मज़ीद खोलते हुए आप अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं : "हुसूल-ए-फ़ज़्ल का अक़्रब तरीक़ दुआ है और दुआ कामिल के लवाज़मात ये हैं कि इस में दर्द हो, बेचेनी और पीढ़ा हो। जो दुआ आजिज़ी, इज़्तेराब और शिकस्ता दिल्ली से भरी हुई हो वह ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल को खींच लाती है।"

इंतेहाई आजिज़ी से दर्द पैदा हो। रो-रो के इन्सान दुआ करे। "और क़बूल हो कर असल उद्देश्य तक पहुंचाती है परंतु मुश्किल यह है कि यह भी ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल के बग़ैर हासिल नहीं हो सकती" इस के लिए भी, इस हालत को पैदा करने के लिए भी अल्लाह का फ़ज़्ल माँगना पड़ेगा "और फिर उसका ईलाज यही है कि दुआ करता रहे ख़ाह कैसी ही बेदिली और बे ज़ौक़ी हो लेकिन यह सैर न हो। तकल्लुफ़ और दर्द से करता ही रहे। असली और हक़ीक़ी दुआ के वास्ते भी दुआ ही की ज़रूरत है।"

नियमित अल्लाह तआला से लगा रहे, अल्लाह तआला का पीछा न छोड़े कि जब तक वह हालत पैदा नहीं होगी मैं ने नहीं उठना तब यह हालत पैदा हो जाएगी और फिर उसके फ़ज़्ल नाज़िल होना शुरू हो जाते हैं।

"बहुत से लोग दुआ करते हैं और उनका दिल सैर हो जाता है "कुछ देर दुआ करने के बाद दिल भर जाता है। "वे कह उठते हैं कि कुछ नहीं बनता परंतु हमारी नसीहत

यह है कि इस ख़ाक पेज़ी ही में बरकत है।"बज़ाहिर यह लगता है कि ख़ाक छान रहे हो लेकिन ख़ाक छानने में ही बरकत है। आख़िर इस में बरकत पड़ जाती है" क्योंकि आख़िर गौहर-ए-मक़सूद इसी से निकल आता है और एक दिन आ जाता है कि जब उसका वह दिल ज़बान के साथ मुत्तफ़िक़ हो।" वह उद्देश्य जो हासिल होना होता है वह आख़िर उसको मिल जाता है या जो हासिल करने की ख़्वाहिश होती है वह उद्देश्य उसको मिल जाता है। फ़रमाया "जब उसका वह दिल ज़बान के साथ मुत्तफ़िक़ हो जाता है और फिर ख़ुद ही वह आजिज़ी और रक्त जो दुआ के लवाज़मात हैं पैदा हो जाते हैं" अर्थात जो ज़बान से कह रहा है वह दिल की हालत हो जाती है। जब वह एक हो जाते हैं तो फिर दुआ के लवाज़मात भी पैदा हो जाते हैं। "जो रात को उठता है ख़ाह कितनी ही अदम हुज़ूरी और बे-सबरी हो लेकिन अगर वह इस हालत में भी दुआ करता है कि इलाही दिल तेरे ही क़बज़ा और तसर्रुफ़ में है तो इस को साफ़ कर दे और ऐन क़बज़ की हालत में अल्लाह तआला से बस्त चाहे।" बड़ा दिल घटा हुआ है और वह चाहता है कि उसकी हालत में एक कशाइश पैदा हो अल्लाह तआला की तरफ़ रुजहान पैदा हो, रग़बत पैदा हो, उसकी मुहब्बत बढ़े" तो इस क़बज़ में से बस्त निकल आएगी।"यह दिल की जो बज़ाहिर तंगी होती है इस में से भी इन्सान का दिल खुल जाता है "और दर्द पैदा हो जाएगी।' दिल खुलना क्या है फिर दुआओं में आनंद पैदा हो जाएगा। इन्सान को रोना आएगा" यही वह वक़्त होता है जो क़बूलियत की घड़ी कहलाती है।" जब ऐसी हालत पैदा हो जाए तो समझो कि यह क़बूलियत की घड़ी हो गई" वह देखेगा कि इस वक़्त रूह आस्ताना उलूहियत पर पानी की तरह बेहती है और गोया एक क़तरा है जो ऊपर से नीचे की तरफ़ गिरता है।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 6 पृष्ठ 93-94 ऐडीशन 1984 ई.)

जब यह हालत होती है तो इन्सान को ख़ुद बख़ुद महसूस होता है कि अब क़ुबूलियत-ए-दुआ का वक़्त है और फिर इस बात पर भी यक़ीन होता है कि ख़ुदा तआला अब जो मेरे लिए करेगा वही मेरे लिए बेहतर होगा। यह नहीं है कि जो मैं ने कहा है वही हो बल्कि फिर रिक़्क़त के बाद यह यक़ीन पैदा हो जाता है, तसल्ली होती है कि अब ख़ुदा तआला इस दुआ के बाद उसके नतीजे में जो भी मेरे लिए करेगा वही मेरे लिए बेहतर है। यह ईमान बढ़ जाता है, कोई शिकवा दिल में नहीं रहता। अतः यह वह हालत है जो हमें अपने अंदर पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए और इसके लिए हमें अपने जायज़े भी लेने चाहिऐं।

फिर उसकी मज़ीद वज़ाहत फ़रमाते हुए एक जगह आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "दुआ तो एक ऐसी चीज़ है जो हर मुश्किल को आसान कर देती है। दुआ के साथ मुश्किल से मुश्किल काम भी आसान हो है "फ़रमाया" लोगों को दुआ की क़दर-ओ--क़ीमत मालूम नहीं वह बहुत जल्द मलूल हो जाते हैं और हिम्मत हार कर छोड़ बैठते हैं हालाँकि दुआ एक इस्तिक़लाल और मुदावमत को चाहती है। जब इन्सान पूरी हिम्मत से लगा रहता है तो फिर एक बदख़ुल्क़ी क्या हज़ारों बद ख़ल्क़ियों को अल्लाह तआला दूर कर देता है और उसे कामिल मोमिन बना देता है लेकिन इसके वास्ते इख़लास और मुजाहिदा शर्त है जो दुआ ही से पैदा होता है।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 6 पृष्ठ 404 ऐडीशन 1984 ई.) कि इख़लास हो, एक मुजाहिदा हो, लगातार कोशिश हो। अतः यह शर्त है जो पैदा करने की ज़रूरत है। इस के लिए हमें अपने दिल को टटोलने की ज़रूरत है कि क्या यह इख़लास और मुजाहिदा की हालत हम में पैदा हो गई है या हम पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं? मुजाहिदा का मतलब ही यह है कि मुसलसल कोशिश करते चले जाना और थकना नहीं। दुनियावी कामों में हम कोशिश करते नहीं थकते तो ख़ुदा का क़ुरब पाने में क्यों थकें।

फिर उसकी फ़िलोसफ़ी को वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "इन्सान को चाहिए कि इस ज़िंदगी को इस क़दर बुरा ख़्याल करके इस से निकलने के लिए कोशिश करे और दुआ से काम ले क्योंकि जब वह हक़ तदबीर का अदा करता है और फिर सच्ची दुआओं से काम लेता है तो आख़िर अल्लाह तआला उसको नजात दे देता है और वह गुनाह की ज़िंदगी से निकल आता है क्योंकि दुआ भी कोई मामूली चीज़ नहीं है बल्कि वह भी एक मौत ही है जब इस मौत को इन्सान क़बूल कर लेता है तो अल्लाह तआला उसको मुजरिमाना ज़िंदगी से जो मौत का मूजिब है बचा लेता है और उसको एक पाक ज़िंदगी अता करता है। "मुजरिमाना ज़िंदगी भी एक मौत ही है। अगले जहान में जा के जो सज़ाएं मिलनी हैं या उस दुनिया में बाअज़ दफ़ा मिल जाती हैं अतः इस से अल्लाह तआला बचा लेता है। फ़रमाया कि "बहुत से लोग दुआ को एक मामूली चीज़ समझते हैं। अतः याद रखना चाहिए कि दुआ यही नहीं कि मामूली तौर पर नमाज़ पढ़ कर हाथ उठा कर बैठ गए और जो कुछ आया मुँह से कह दिया इस दुआ से कोई फ़ायदा नहीं होता क्योंकि यह दुआ निरी एक मंत्र है।" जिस तरह कुछ मज़हब वाले मंत्र पढ़ लेते हैं। यह तो मंत्र ही है "न इस में दिल शरीक होता है और न अल्लाह तआला की क़ुदरतों और ताक़तों पर कोई ईमान होता है।" दिल से तो आवाज़ निकल नहीं रही होती न यह इज़हार हो रहा होता है कि अल्लाह तआला सब क़ुदरतों और ताक़तों का मालिक है।

"याद रखो दुआ एक मौत है और जैसे मौत के वक़्त-ए-इज़्तिराब और बेक़रारी होती है इसी तरह पर्दा के लिए भी वैसा ही इज़्तेराब और जोश होना ज़रूरी है। इस लिए दुआ के वास्ते पूरा-पूरा इज़्तेराब और गदाज़श जब तक न हो तो बात नहीं बनती। अतः चाहिए कि रातों को उठ उठकर निहायत तज़र्रे और ज़ारी-ओ-इबतेहाल के साथ ख़ुदा तआला के हुज़ूर अपनी मुश्किलात को पेश करे और इस दुआ को इस हद तक पहुँचावे कि एक मौत की सी सूरत वाक़्य हो जाए। उस वक़्त दुआ क़बूलियत के दर्जा तक पहुँचती है।" फ़रमाया "यह भी याद रखो कि सबसे अव्वल और ज़रूरी दुआ यह है कि इन्सान अपने आपको गुनाहों से पाक साफ़ करने की दुआ करे।"

बड़ी अहम बात है। पहली दुआ यह है कि इन्सान अपने आपको गुनाहों से पाक साफ़ करने की दुआ करे। सारी दुआओं का असल और अंग है।

फ़रमाया "सारी दुआओं का असल और जुज़ु यही दुआ है' जड़ दुआओं की यही है"क्योंकि जब यह दुआ क़बूल हो जाए और इन्सान हर किस्म की गंदगियों और आलूदगियों से पाक साफ़ हो कर ख़ुदा तआला की नज़र में पवित्र हो जाए।" यह भी बड़ी अहम बात है। यह नहीं कि हमने समझ लिया हम पाक हो गए तो ख़ुदा तआला की नज़र में मुतह्हर हो जाएगा। उस वक़्त तक दुआ करता चला जाए जब तक तसल्ली न हो जाए कि ख़ुदा तआला ने मुझे पाक कर दिया है और उसकी नज़र में पाक हो जाऊं। इसका मतलब यह है कि फिर दुबारा बुराई का ख़्याल न आए "तो फिर दूसरी दुआएं जो उसकी हाजात-ए-ज़रुरिया के विषय में होती हैं वह उसको मांगनी भी नहीं पड़तीं वह ख़ुद-बख़ुद क़बूल होती चली जाती हैं।" जब यह हालत हो जाती है तो फिर अल्लाह तआला भी दोस्ती का हक़ अदा करता है और फिर उसकी हाजात को पूरा करता रहता है। फ़रमाया कि "बड़ी मशक़्क़त और मेहनत-तलब यही दुआ है कि वह गुनाहों से पाक हो जाए" गुनाहों से पाक होने की यह दुआ कोई मामूली नहीं है। यह बहुत बड़ी दुआ है।"और ख़ुदा तआला की नज़र में मुत्तक़ी और रास्तबाज़ ठहराया जाए।" अल्लाह तआला की नज़र में मुत्तक़ी और रास्तबाज़ हों। अपने आपको न समझ लें या केवल लोग न हमें समझें।"अर्थात अव्वल अव्वल जो हिजाब इन्सान के दिल पर होते हैं उनका दूर होना ज़रूरी है। जब वह दूर हो गए तो दूसरे हिजाबों के दूर करने के वास्ते इस क़दर मेहनत और मशक़्क़त करनी नहीं पड़ेगी क्योंकि ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल उसके शामिल-ए-हाल हो कर हज़ारों ख़राबियां ख़ुद बख़ुद दूर होने लगती हैं और जब अंदर पाकीज़गी और तहारत पैदा होती है और अल्लाह तआला से सच्चा ताल्लुक़ पैदा हो जाता है तो फिर अल्लाह तआला ख़ुद ब-ख़ुद उसका मुतकफ़्फ़िल और मुतवल्ली होता है और इस से पहले कि वह अल्लाह तआला से अपनी किसी हाजत को मांगे अल्लाह तआला ख़ुद उस को पूरा कर देता है।" चाहे वह दुनियावी हाजात हो। वह भी पूरी हो जाती हैं ।"यह एक बारीक रहस्य है" बड़ा बारीक राज़ है"जो उस वक़्त खुलता है जब इन्सान इस मुक़ाम पर पहुंचता है। इस से पहले उसकी समझ में आना भी मुश्किल होता है लेकिन यह एक अज़ीमुश्शान मुजाहिदा का काम है क्योंकि दुआ भी एक मुजाहिदा को चाहती है जो शख़्स दुआ से लापरवाही करता है और इस से दूर रहता है अल्लाह तआला भी इसकी पर्वा नहीं करता और इस से दूर हो जाता है। जल्दी और शताबकारी यहां काम नहीं देती।" जल्द-बाज़ी काम नहीं आएगी।" ख़ुदा तआला अपने फ़ज़्ल-ओ-करम से जो चाहे अता करे और जब चाहे इनायत फ़रमाए।" जो चाहे दे और जब चाहे दे यह हमेशा ज़हन में रहना चाहिए। "सायल का काम नहीं है कि वो तुरंत अता न किए जाने पर शिकायत करे और बदज़नी करे बल्कि इस्तिक़लाल और सब्र से मांगता चला जाए।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 6 पृष्ठ 406-407 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः मुस्तक़िल मिज़ाजी शर्त है और सबसे अहम दुआ अपने आपको पाक करने की है। ऐसी पाकीज़गी जो ख़ुदा तआला की नज़र में पाकीज़गी है।

दुआ की क़बूलियत के लिए क्या हालत होनी चाहिए इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "दुआ के अंदर क़बूलियत का असर उस वक़्त पैदा होता है जब वह इंतेहाई दर्जा के इज़्तरार तक पहुंच जाती है।

जब इंतेहाई दर्जा इज़्तेरार का पैदा हो जाता है उस वक़्त अल्लाह तआला की तरफ़ से इस की क़बूलियत के आसार और सामान भी पैदा हो जाते हैं। पहले सामान आसमान पर किए जाते हैं इसके बाद वह ज़मीन पर-असर दिखाते हैं। यह छोटी सी बात नहीं "अल्लाह तआला दुआ को क़बूल करता है तो वहां से इस का हुक्म-जारी हो जाता है और फिर उसके असरात ज़मीन पर आने शुरू हो जाते हैं। यह छोटी सी बात नहीं है "बल्कि एक अज़ीमुश्शान हक़ीक़त है बल्कि सच्च तो यह है कि जिसको ख़ुदाई

का जल्वा देखना हो उसे चाहिए कि दुआ करे।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 6 पृष्ठ 408-409 ऐडीशन 1984 ई.)

कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि जो अल्लाह तआला ने फ़ैसला कर लिया है वह होना है और अल्लाह तआला के इलम में है कि ये होगा तो फिर दुआ की क्या ज़रूरत है? यह भी प्रश्न उठते हैं। उसकी वज़ाहत करते हुए कि दुआ क्यों ज़रूरी है।

आप जगह फ़रमाते हैं कि "अगर दुआ अपने इख़्तेयार में होती तो इन्सान जो चाहता कर लेता। इसलिए हम नहीं कह सकते कि अमुक दोस्त या रिश्तेदार के हक़ में ज़रूर अमुक बात हो ही जावेगी" दुआ के लिए कुछ लोग कहते हैं ज़रूरी नहीं है कि ज़रूर क़बूल हो जाए। हमारे इख़्तेयार में तो नहीं है। यह तो अल्लाह तआला की मर्ज़ी है कि किस तरह उसने क़बूल करनी है।" कुछ वक़्त बावजूद सख़्त ज़रूरत महसूस करने के दुआ नहीं होती।" दुआ के लिए कहा भी जाता है और सख़्त ज़रूरत भी महसूस हो रही होती है लेकिन वह दिल की कैफ़ीयत पैदा नहीं होती "और दिल सख़्त हो जाता है चूँकि उस के रहस्य से लोग वाक़िफ़ नहीं होते" इस राज़ से लोग वाक़िफ़ नहीं" इस लिए गुमराह हो जाते हैं।" कहते हैं हालत नहीं पैदा हुई तो दुआ करने का फ़ायदा क्या। फ़रमाया कि "इस पर एक संदेह यह पैदा होता है कि फिर कमज़ोर क़लम वाली बात (अर्थात) तक़दीर का मसला जिस रंग में समझा गया है ठीक है।" अर्थात फिर तो यही हुआ नाँ कि जो तक़दीर है हमारे लिए जो मुक़द्दर है वही होना है तो दुआ करने की क्या ज़रूरत है? कोशिश करने की क्या ज़रूरत है? फ़रमाया "लेकिन इस का उत्तर यह है कि ख़ुदा के इलम में सब ज़रूर है" अल्लाह तआला के इलम में यह तो ज़रूर है कि यह होगा "लेकिन इस से यह लाज़िम नहीं आता कि ख़ुदा तआला इस बात पर क़ादिर नहीं है कि अमुक काम ज़रूर ही कर देवे।" इलम में होना इस बात की दलील नहीं है कि अल्लाह तआला की ताक़तों से बाहर चला गया कि वह बात ज़रूर इसी तरह होगी "अगर उन लोगों का यही एतेक़ाद है कि जो कुछ होना था वह सब हो चुका और हमारी मेहनत और कोशिश बेसूद है तो "फिर दुनियावी मिसाल आप ने दी है कि सिर में दर्द हो "दर्द-ए-सर के वक़्त ईलाज की तरफ़ क्यों रुजू करते हैं।" कुछ वक़्त के बाद दर्द-ए-सिर आप ही हिट जाएगी या होनी है तो होनी है फिर दवाई खाने की ज़रूरत क्या है।"प्यास के लिए ठंडा पानी क्यों पीते हैं? "ऐसे लोग भी हैं जो पानी नहीं पीते तो एक वक़्त आता है प्यास ख़ुद बख़ुद मर जाती है लेकिन फ़ौरी तौर पर पानी पिया जाता है लेकिन इस से ज़रूरी नहीं कि हर एक की प्यास मरे। प्यास से लोग मर भी जाते हैं। इस लिए प्यास के लिए ठंडा पानी क्यों पीते हो? इस लिए कि प्यास बुझे। "बात यह है कि इन्सान के तरद्दुद पर भी कुछ न कुछ नतीजा ज़ाहिर होता है।" जब इन्सान कोशिश करता है, मेहनत करता है, दुआ करता है तो फिर इसका नतीजा भी ज़ाहिर होता है। इसलिए यह ज़रूरी नहीं है कि अल्लाह तआला के इलम में यह है, यह होगा लेकिन अल्लाह तआला अपनी तक़दीर को दुआओं के ज़रीये से बदल नहीं देता। एक बीमार है, उसकी मौत को डाक्टर ने कह दिया कि अब मरने वाला है लेकिन दुआओं की वजह से उसको नौ साल, चार साल, दस साल की ज़िंदगी मिल जाती है तो अल्लाह तआला ने वह तक़दीर बदल दी। यह तो ठीक है हर इन्सान की फ़ना है लेकिन उस को लंबी ज़िंदगी अल्लाह तआला अता फ़र्मा देता है और सेहत मंद ज़िंदगी अता फ़र्मा देता है। फ़रमाया कि "दुआ उम्दा वस्तु है। अगर तौफ़ीक़ हो तो ज़रीया मग़फ़िरत का हो जाती है।"

अगर और कुछ भी नहीं होता तो यह दुआ मग़फ़िरत का ज़रीया ही बन जाती है। अगर वह उद्देश्य पूरा न भी हो जिस के लिए दुआ की जाती है तब भी अल्लाह तआला इस दुआ को सँभाल लेता है और वह इस दुनिया में या अगले जहान में इसके लिए मग़फ़िरत का ज़रीया बन जाती है। इस के लिए आसानियां पैदा करने का ज़रीया बन जाती है। इस के लिए बख़्शिश का ज़रीया बन जाती है" और इसी के ज़रीया से रफ़्ता-रफ़्ता ख़ुदा तआला मेहरबान हो जाता है" और फिर ख़ुदा तआला की मेहरबानियां भी शुरू हो जाती हैं। अगर इस ज़िंदगी में मग़फ़िरत का इनाम मिलना शुरू हो जाए तो फिर ख़ुदा तआला की मेहरबानी के जल्वे भी इन्सान देखना शुरू कर देता है। फ़रमाया कि "दुआ के न करने से अव्वल ज़ंग दिल पर चढ़ता है' न करने से दिल पर ज़ंग चढ़ जाता है "फिर क़सावत पैदा होती है" दिल में सख़्ती पैदा हो जाती है कि क्या ज़रूरत है दुआ की और इन्सान दूर हटता जाता है। "फिर ख़ुदा से अजन-बीयत" पैदा हो जाती है। अल्लाह तआला से दुओरी पैदा हो जाती है। अल्लाह तआला को ग़ैर समझने लग जाता है "फिर अदावत" पैदा होती है "फिर नतीजा सल्ब-ए-ईमान होता है।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 6 पृष्ठ 422-423 ऐडीशन 1984 ई.) और आख़िर में फिर अल्लाह तआला पर ईमान ही उठ जाता है।

तो यह मुख़्तलिफ़ हालतें हैं जो दुआ न करने की वजह से फिर बतदरीज होती हैं। आदमी को पहले ज़ंग लगता है। फिर सख़्ती पैदा होती है। फिर दहरियत पैदा होती है। फिर इन्सान अदावत और दुश्मनी में बढ़ने लग जाता है। ऐसे ख़्यालात आने लग जाते हैं। फिर ईमान ज़ाए हो जाता है। फिर इन्सान दहरिया हो जाता है। इसलिए दुआ की तरफ़ ज़रूर आओ। और नहीं तो फिर जो ईमान ज़ाए हो जाए तो फिर इन्सान की दुनिया-और-आक़िबत दोनों बर्बाद हो गईं।

फिर यह बात वर्णन फ़रमाते हुए कि किस किस्म की दुआ इस्लाम का फ़ख़र है आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "दुआ इस्लाम का ख़ास फ़ख़र है और मुस्लमानों को इस पर बड़ा नाज़ है परंतु यह याद रखो कि यह दुआ ज़बानी बक-बक का नाम नहीं है बल्कि यह वह चीज़ है कि दिल ख़ुदा तआला के ख़ौफ़ से भर जाता है और दुआ करने वाले की रूह पानी की तरह बह कर आस्ताँ-ए-उलूहियत पर गिरती है और अपनी कमज़ोरियों और लग़्ज़िशों के लिए क़वी और मुक़तदिर ख़ुदा से ताक़त और क़ुव्वत और मग़फ़िरत चाहती है और यह वह हालत है कि दूसरे अल्फ़ाज़ में इस को मौत कह सकते हैं। जब यह हालत मयस्सर आ जावे तो निसन्देह समझो कि बाब-ए-इजाबत उसके लिए खोला जाता है।"अब दुआ की क़बूलियत का दरवाज़ा खुल गया"और ख़ास क़ुव्वत और फ़ज़्ल और इस्तिक़ामत बदियों से बचने और नेकियों पर इस्तिक़लाल के लिए अता होती है। यह ज़रीया सबसे बढ़कर ज़बरदस्त है। परंतु बड़ी मुश्किल यह है कि लोग दुआ की हक़ीक़त और हालत से महिज़ नावाक़िफ़ हैं और इसी वजह से इस ज़माना में बहुत से लोग इस से मुनकिर हो गए हैं क्योंकि वह इन तासीरात को नहीं पाते और मुनकिर होने की एक वजह यह भी है कि वह कहते हैं कि जो कुछ होना है वह तो होना ही है "वही तक़दीर वाली बात। "फिर दुआ की क्या हाजत है परंतु मैं ख़ूब जानता हूँ कि यह तो निरा बहाना है। उन्हें चूँकि दुआ का अनुभव नहीं, उस की तासीरात पर इत्तिला नहीं इस लिए इस तरह कह देते हैं अन्यथा अगर वे ऐसे ही मुतवक्किल हैं तो फिर बीमार हो कर ईलाज क्यों करते हैं? .. जबकि दूसरे इश्याय में तासीरात मौजूद हैं तो क्या वजह है कि बातिनी दुनिया में तासीरात न हों "अर्थात कि जो रुहानी और अंदरूनी है इस में तासीरात न हों" जिनमें से दुआ एक ज़बरदस्त चीज़ है।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 263-264 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः दुआ में तासीरात हैं लेकिन उन की दुआओं में जो अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करने वाले हैं। हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ उल-ईबाद की अदायगी करने का हक़ अदा करने वाले हैं और मुस्तक़िल मिज़ाजी से करते चले जाने वाले हैं। अल्लाह तआला ने जिन बातों को करने का हुक्म दिया है उन्हें करने वाले हैं और जिनसे रोका है उनसे रुकने वाले हैं और फिर उनके ईमान में ज़रा भी लग़्ज़िश न आए बल्कि ईमान में बढ़ते चले जाने वाले हों। फिर यह हालत भी पैदा हो जाती है।

फिर दुआ को मुस्तक़िल मिज़ाजी से करते चले जाने के बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "दुआ करते वक़्त बेदिली और घबराहट से काम नहीं लेना चाहिए और जल्दी ही थक कर नहीं बैठना चाहिए बल्कि उस वक़्त तक हटना नहीं चाहिए जब तक दुआ अपना पूरा असर न दिखाए। जो लोग थक जाते और घबरा जाते हैं वे ग़लती करते हैं क्योंकि यह महरूम रह जाने की निशानी है। मेरे नज़दीक दुआ बहुत उम्दा चीज़ है और मैं अपने तजुर्बा से कहता हूँ, ख़्याली बात नहीं जो मुश्किल किसी तदबीर से हल न होती हो अल्लाह तआला दुआ के ज़रीया इसे आसान कर देता है। मैं सच्च कहता हूँ कि दुआ बड़ी ज़बरदस्त असर वाली वस्तु है।

बीमारी से शिफ़ा उसके ज़रीया मिलती है। दुनिया की तंगियाँ मुश्किलात इस से दूर होती हैं।" दुनिया की तंगियाँ और मुश्किलात भी इस से दूर होती हैं "दुश्मनों के मंसूबे से यह बचा लेती है और वह क्या चीज़ है जो दुआ से हासिल नहीं होती? सबसे बढ़कर यह कि इन्सान को पाक यह करती है।" सबसे बड़ी बात यह है कि इन्सान को पाक करती है और यही इन्सान का एक मोमिन का एक आबिद का असल उद्देश्य होना चाहिए "और ख़ुदा तआला पर ज़िंदा ईमान यह बख़्शती है। गुनाह से नजात देती है और नेकियों पर इस्तिक़ामत उसके ज़रीया से आती है। बड़ा ही ख़ुश-क़िस्मत वह व्यक्ति है जिसको दुआ पर ईमान है क्योंकि वह अल्लाह तआला की अजीब दर अजीब क़ुदरतों को देखता है और ख़ुदा तआला को देखकर ईमान लाता है कि वह क़ादिर करीम ख़ुदा है।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 265-266 ऐडीशन 1984 ई.)

दुआ की क़बूलियत के न होने पर शिकवा करने वालों के जवाब में आप अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं "बहुत से लोग हैं जो कि अल्लाह तआला पर इल्ज़ाम लगाते हैं और अपने आपको बरी ख़्याल करके कहते हैं कि हमने तो नमाज़ भी पढ़ी और दुआ भी की है परंतु क़बूल नहीं होती। यह उन लोगों का अपना क़सूर होता है।

नमाज़ और दुआ जब तक इन्सान ग़फ़लत और कसल से ख़ाली न हो तो वह क़बूलियत के काबिल नहीं हुआ करती

अगर इन्सान एक ऐसा खाना खाए जो कि बज़ाहिर तो मीठा है परंतु उसके अंदर ज़हर मिला हुआ है तो मिठास से वह ज़हर मालूम तो नहीं होगा परंतु पेशतर इसके कि मिठास अपना असर करे ज़हर पहले ही असर करके काम तमाम कर देगा इन्सान को मार देगा। "यही वजह है कि ग़फ़लत से भरी हुई दुआएं क़बूल नहीं होतीं क्योंकि ग़फ़लत अपना असर पहले कर जाती है। यह बात बिल्कुल नामुमकिन है कि इन्सान अल्लाह तआला का बिल्कुल मुतीअ हो और फिर उसकी दुआ क़बूल न हो। हाँ यह ज़रूरी है कि उसके निर्धारित शरायत

को कामिल तौर पर अदा करे।

" (मल् फ़ूज़ात, भाग 5 पृष्ठ 318-319 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः अल्लाह तआला की शरायत में से यह है कि अल्लाह तआला की बात मुकम्मल तौर पर मानी जाए, लब्बैक कहा जाए और उस पर ईमान मज़बूत हो। कुछ हो जाए परंतु इन्सान अल्लाह तआला का दर न छोड़े।

अल्लाह तआला ने अस्बाब पैदा किए, उनका इस्तिमाल करना भी दुआ के साथ ज़रूरी है।

इस बारे में आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "यह सच्ची बात है कि जो शख़्स आमाल से काम नहीं लेता वह दुआ नहीं करता बल्कि ख़ुदा तआला की आज़माईश करता है इस लिए दुआ करने से पहले अपनी समस्त ताक़तों को ख़र्च करना ज़रूरी है और यही अर्थ इस दुआ "اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ"के हैं। पहले लाज़िम है कि इन्सान अपने एतिक़ाद, आमाल में नज़र करे क्योंकि ख़ुदा तआला की आदत है कि इस्लाह अस्बाब के पैराया में होती है।" इस्लाह होने के लिए बहरहाल कोई अस्बाब मुहय्या होते हैं। "वह कोई न कोई ऐसा सबब पैदा कर देता है कि जो इस्लाह का मूजिब हो जाता है वे लोग इस मुक़ाम पर ज़रा ख़ास ग़ौर करें जो कहते हैं कि जब दुआ हुई तो अस्बाब की क्या ज़रूरत है। वे नादान सौचें कि दुआ बजा-ए-ख़ुद एक मख़फ़ी सबब है। "दुआ भी तो एक सबब ही है कि "जो दूसरे अस्बाब को पैदा कर देता है।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 124 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "इस्लाम से सच्ची मुराद यही है कि इन्सान अल्लाह तआला की रज़ा के ताबे अपनी रज़ा कर ले परंतु सच यह है कि यह मुक़ाम इन्सान की अपनी क़ुव्वत से नहीं मिल सकता। हाँ इस में कलाम नहीं कि इन्सान का फ़र्ज़ है कि वह मुजाहिदात करे लेकिन इस मुक़ाम के हुसूल का असल और सच्चा ज़रीया दुआ है। इन्सान कमज़ोर है जब तक दुआ से क़ुव्वत और ताईद नहीं पाता इस दुश्वार-गुज़ार मंज़िल को तै नहीं कर सकता। ख़ुद अल्लाह तआला ने इन्सान की कमज़ोरी और उसके ज़ोफ़ हाल के विषय में इरशाद फ़रमाता है। خُلِقَ الۡاِنۡسَانُ ضَعِيۡفًا अर्थात इन्सान ज़ईफ़ और कमज़ोर बनाया गया है। फिर बावजूद उसकी कमज़ोरी के अपनी ही ताक़त से ऐसे आली दर्जा और अर्फ़ा मुक़ाम के हासिल करने का दावा करना सरासर ख़ामख़याली है। इसके लिए दुआ की बहुत बड़ी ज़रूरत है। दुआ एक ज़बरदस्त ताक़त है जिससे बड़े-बड़े मुश्किल मुक़ाम हल हो जाते हैं और दुश्वार-गुज़ार मंज़िलों को इन्सान बड़ी आसानी से तै कर लेता है क्योंकि दुआ इस फ़ैज़ और क़ुव्वत के जज़्ब करने वाली नाली है जो अल्लाह तआला से आता है। जो शख़्स कसरत से दुआओं में लगा रहता है वह आख़िर उस फ़ैज़ को खींच लेता है और ख़ुदा तआला से ताईद याफताह हो कर अपने उद्देश्य को पा लेता है। हाँ निरी दुआ ख़ुदा तआला का मंशा नहीं है बल्कि अव्वल तमाम मसाई और मुजाहिदात को काम में लाए और इसके साथ दुआ से काम ले, अस्बाब से ले।

अस्बाब से काम नहीं लेना और निरी दुआ से काम लेना यह आदाब दुआ से न-वाक़िफ़ी है और ख़ुदा तआला को आज़माना है और निरे अस्बाब पर गिरा रहना और दुआ को कुछ नहीं महिज़ समझना यह नास्तिकता है।

निश्चित समझो कि दुआ बड़ी दौलत है। जो शख़्स दुआ को नहीं छोड़ता उसके दीन और दुनिया पर आफ़त नहीं आएगी। वह एक ऐसे क़िले में महफ़ूज़ है जिसके इर्द-गिर्द हथयारों के साथ सिपाही हर वक़्त हिफ़ाज़त करते हैं लेकिन जो दुआओं से लापरवा है वह इस शख़्स की तरह है जो ख़ुद बे हथियार है और इस पर कमज़ोर भी है और फिर ऐसे जंगल में है जो दरिंदों और मूज़ी जानवरों से भरा हुआ है। वह समझ सकता है कि इस की ख़ैर हरगिज़ नहीं है। एक लम्हा में वह मूज़ी जानवरों का शिकार हो जाएगा और इस की हड्डी बोटी नज़र नहीं आएगी। इस लिए याद रखो कि इन्सान की बड़ी सआदत और इसकी हिफ़ाज़त का असल माध्यम यही दुआ है। यही दुआ उसके लिए पनाह है अगर वह हर वक़्त इस में रहे।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 192-193 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर फ़रमाया : "ख़ुदा तआला एक ताल्लुक़ चाहता है और उसके हुज़ूर में दुआ करने के लिए ताल्लुक़ की ज़रूरत है। बग़ैर ताल्लुक़ के दुआ नहीं हो सकती। पहले बुज़ुर्गों की भी इस किस्म की बातें चली आती हैं कि जिनसे दुआ करने वालों को दुआ कराने से पहले ताल्लुक़ साबित करने की ताकीद की। ख़्वानख़्वाह बाज़ार में चलते हुए किसी बे-तअल्लुक़ को कोई नहीं कह सकता कि तू मेरा दोस्त है और न ही उस के लिए दर्द-ए-दिल पैदा होता है और न ही जोश-ए-दुआ पैदा हो सकता है। अल्लाह तआला से ताल्लुक़ इस तरह नहीं हो सकता कि इन्सान ग़फ़लत कारियों में भी मुबतला रहे और केवल मुँह से दम भरता रहे कि मैं ने ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ पैदा कर लिया है।" फ़रमाया"..अल्लाह तआला से ताल्लुक़ के लिए एक लगाव करने की ज़रूरत है। हम बार-बार अपनी जमात को इस बात पर क़ायम होने के लिए कहते हैं" फ़रमाया कि "हम बार-बार अपनी जमात को इस बात पर क़ायम होने के लिए कहते हैं क्योंकि जब तक दुनिया की तरफ़ से इन्क़िता और उसकी मुहब्बत दिलों से ठंडी हो कर अल्लाह तआला के लिए फ़ितरतों में तिब्बी जोश और महवियत पैदा नहीं होती उस वक़्त तक सबात मुयस्सर नहीं आ सकता।

(मल् फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 42-43 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः हमें इन दिनों में जब कि अल्लाह तआला ने विशेषता यह बरकत का महीना हमारे लिए मुहय्या फ़रमाया है अपने अंदर पाक तबदीलिया पैदा करते हुए दुआओं की तरफ़ तवज्जा दीनी चाहिए। यही हमारी दुनिया-ओ-आक़िबत संवारने का ज़रीया है।

रमज़ान का अब आख़िरी अशरा शुरू हो रहा है इस में विशेषता हमें अल्लाह तआला के हुक्मों को अपना लाहे अमल बनाते हुए, ईमान में मज़बूत होते हुए रातों को उठकर उसके हुज़ूर झुकते हुए उस के क़ुरब को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए ताकि हम इस हिदायत को पाने वाले हों। जिस पर अल्लाह तआला हमें चलाना चाहता है।

रमज़ान की दुआओं में विशेषता जमात की तरक़्क़ी के लिए दुआएं करें। असीरान के लिए दुआएं करें अल्लाह तआला उनकी रिहाई के सामान जल्द पैदा फ़रमाए।

यमन के असीरान के लिए दुआएं करें विशेषता एक ख़ातून वहां हैं। उनको क़ैद में ज़ालिमाना तौर पर एक तंग सी कोठड़ी में रखा हुआ है जो बाक़ी असीरान से अलैहदा हैं लेकिन वह बड़े सब्र और ईमान की पुख़्तगी का मुज़ाहरा करते हुए वहां रह रही हैं। अल्लाह तआला उनकी रिहाई के भी सामान जल्द पैदा फ़रमाए। जो बद ज़न्नीयाँ जमाअत के बारे में इन लोगों के दिल में हैं अर्थात मुख़ालिफ़ीन के, अल्लाह तआला उन्हें दूर फ़रमाए।

फ़लस्तीनियों को भी दुआओं में याद रखें बज़ाहिर तो यह कहते हैं जी बड़ी तबदीलियाँ पैदा हो रही हैं लेकिन हालात तो बदतर ही हो रहे हैं। यू उन का रैज़ोलीयूशन जो पास हुआ है इस के बावजूद यह ज़ुलम इसी तरह जारी है और यहां मग़रिबी बड़ी ताक़तों के दोहरे मयार का भी पता चलता है। यही ज़ुलम जब उनके पसंदीदा लोगों पर हो, मुल्कों पर हो तो फ़ौरी दूसरे मुल्क पर पाबंदियां आयद हो जाती हैं लेकिन इसराईल पर पाबंदियां नहीं लगाई जाएँगी बल्कि अमरीका ने पिछले दिनों कई बिलीयन डालर की ग़ैर मशरूत इमदाद उनके लिए मंज़ूर की है लेकिन फ़लस्तीनियों के लिए चंद मिलियन की इमदाद मंज़ूर की है फिर शर्त ये लगा दी कि वह इसराईल के ख़िलाफ़ अदालत-ए-इन्साफ़ में नहीं जाएंगे या किसी फ़ोर्म पर नहीं जाएंगे जहां उनको उसके ख़िलाफ़ कुछ कहने का अवसर मिले। तो उन जैसे लोगों से क्या तवक़्क़ो की जा सकती है। अतः दुआ ही है अल्लाह तआला ही है जो इन मज़लूमों को इन ज़ालिमों से निजात दे और हमें भी इन मज़लूमों के लिए दुआ का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

बदज़न्नी

फ़साद इस से शुरू होता है कि इन्सान ज़नून फ़ासदा और शकूक से काम लेना शुरू करे। अगर नेक ज़न करे तो फिर कुछ देने की तौफ़ीक़ भी मिल जाती है। जब पहली ही मंज़िल पर-ख़ता की तो फिर मंज़िल-ए-मक़्सूद पर पहुंचना मुश्किल है। बदज़नी बहुत बुरी चीज़ है। इन्सान को बहुत सी नेकियों से महरूम कर देती है और फिर बढ़ते बढ़ते यहां तक नौबत पहुंच जाती है कि इन्सान ख़ुदा पर बदज़नी शुरू कर देता है।

अगर बदज़नी का मर्ज़ नहीं बढ़ गया होता तो बतलाओ इन मौलवियों को जिन्होंने मेरी तकफ़ीर और ईज़ा देही में कोई दक़ीक़ा उठा नहीं रखा और कोई कसर बाक़ी नहीं छोड़ी, कौन सी वजह कुफ़्र की और मेरी तक़ज़ीब की नज़र आई थी। मैंने पुकार पुकार कर और ख़ुदा तआला की कसमें खा-खा कर कहा कि मैं मुस्लमान हूँ। क़ुरआन-ए--करीम को ख़ातमुल् कुतुब और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुल अम्बिया मानता हूँ और इस्लाम को एक ज़िंदा मज़हब और हक़ीक़ी नजात का ज़रीया क़रार देता हूँ। ख़ुदा तआला की मक़ादीर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाता हूँ। उसी क़िबला की तरफ़ मुँह कर के नमाज़ पढ़ता हूँ। उतनी ही नमाज़ें पढ़ता हूँ। रमज़ान के पूरे रोज़े रखता हूँ। फिर वह कौन सी निराली बात थी जो उन्होंने मेरे कुफ़्र के लिए ज़रूरी समझी। सरीह ज़ुलम है। वह अपने गंदे आमाल और ज़िंदगी को नहीं देखते। वह ज़मीन और आसमान पर ग़ौर और तदब्बुर कर के यह नहीं समझ सकते कि इन विषयों का ख़ालिक़ है। लेखराम के निशान से मौलवियों ने क्या लाभ उठाया?

(मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम , पृष्ठ 507 प्रकाशन 2018 कादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

बैठने की जगह नहीं बल्कि अमल का मुक़ाम है, केवल इतना अंतर है कि इस जहान में इन्सान से गुनाह भी सादर हो जाता है परंतु वहां कोई बुरा फ़ेअल सरज़द नहीं होगा और इन्सान हर किस्म के रुहानी तनज़्ज़ुल से महफ़ूज़ रहेगा।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 6 पृष्ठ 22 प्रकाशन 2010 कादियान)

★ ★ ★

यदि ख़ुद्दाम को नमाज़ पढ़ने की आदत हो जाएगी तो फिर इन श अल्लाह बाक़ी चीज़ों की तरफ़ भी तवज्जा पैदा होती है
क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने की तरफ़ उनकी ज़्यादा होनी चाहिए
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कोई न कोई हवाला निकाल कर या कोई हदीस निकाल के ख़ुद्दाम को दिया करें ताकि वे इस को पढ़ें और अपनी इस्लाह करें और तर्बीयत करें, फिर कोशिश करें कि सारे ख़ुद्दाम मेरा ख़ुतबा जुमा एम. टी.ए. पर जो आता है इस को हर दफ़ा सुना करें

मुख़्तलिफ़ गिरोहों के लिए, मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब से बैअत करने वालों के लिए मुख़्तलिफ़ मंसूबे होने चाहिए
जो ईसाइयत में से शामिल होते हैं उनके लिए मुख़्तलिफ़ तर्बीयती प्रोग्राम होना चाहिए
चाहिए कि वे नमाज़ के अल्फ़ाज़ सीखें, सूरः फ़ातिहा सीखें, उनको नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा बताएं और नमाज़ का मतलब सिखाएँ और यह कि पांचों समय नमाज़ क्यों अदा करनी चाहिए

हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ नैशनल आमिला मज्लिस ख़ुद्दामुल् अहमदिया बुर्कीना फासो की ऑनलाइन मुलाक़ात और हुज़ूर अनवर के कीमती उपदेश

इमाम जमात अहमदिया हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 26 फ़रवरी 2022 ई. को मजलिस ख़ुद्दामुल् अहमदिया बुर्कीना फासो की नैशनल मजलिस-ए-आमला और रीजनल क़ायदीन से ऑनलाइन मुलाक़ात फ़रमाई

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने इस मुलाक़ात को इस्लामाबाद (टिलफ़ोरड) में क़ायम एम. टी.ए. स्टूडीयोज़ से रौनक बख़शी जबकि 30 से ज़ायद मैंबरान मजलिस-ए-आमला ने जामेअतुल् मुबशेरीन वाक़्य बुस्तान--ए-महृदी, वागह डोगो बुर्कीना फासो से ऑनलाइन शिरकत की

65 मिनट पर मुश्तमिल इस मुलाक़ात में जुमला हाज़िरीन (मैंबरान-ए--मजलिस-ए-आमला) को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में अपने शोबा जात की रिपोर्ट पेश करने और राहनुमाई-ओ--हिदायात हासिल करने का अवसर मिला

मुहतमिम साहिब तर्बीयत, श्रीमान हुस्न जुनिगानी साहिब मुरब्बी सिलसिला बूबो जलासो, जिन्हों ने जामिआ अहमदिया घाना इंटरनैशनल से शाहिद पास किया हुआ है, ने उर्दू में अपना परिचय करवाना शुरू किया तो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अच्छा आप मुझे टाइप करके उर्दू में ख़त लिखते रहते हैं? उन्होंने अर्ज़ किया कि जी हुज़ूर

हुज़ूर अनवर ने मुहतमिम साहिब तर्बीयत को हिदायत देते हुए फ़रमाया कि तर्बीयत का प्लान किया है? किस तरह तर्बीयत करेंगे? नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा है? क़ुरआन पढ़ने की तरफ़ तवज्जा है? दीनी इलम सीखने की तरफ़ तवज्जा है? अख़्लाक़ को बेहतर करने की तरफ़ तवज्जा है? और अगर है तो किस तरह है? नमाज़ें पढ़ने के बारे में क्या मन्सूबा है? कितने फ़ीसद ख़ुद्दाम बाजमाअत नमाज़ पढ़ते हैं? आपके हाँ तो restriction कोई नहीं है वहां नमाज़ बाजमाअत पढ़नी चाहिए।

उन्होंने बताया कि जी हुज़ूर इन सब उमूर की अंजाम देही के लिए कोशिश कर रहे हैं कि बेहतर से बेहतर हो जाएं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि असल चीज़ तो यही है, नमाज़। नमाज़ की तरफ़ तवज्जा होनी चाहिए। अगर ख़ुद्दाम को नमाज़ पढ़ने की आदत हो जाएगी तो फिर इन श अल्लाह बाक़ी तरफ़ भी तवज्जा पैदा होती है। तो (यूं तर्बीयत करें)। और दूसरे क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने की तरफ़ उनकी ज़्यादा तवज्जा होनी चाहिए। फिर यह है कि तर्बीयत के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक सफ़े का, आधे सफ़े का कोई न कोई हवाला निकाल कर या कोई हदीस निकाल के ख़ुद्दाम को दिया करें ताकि वे इस को पढ़ें और अपनी इस्लाह करें और तर्बीयत करें, फिर कोशिश करें कि सारे ख़ुद्दाम मेरा ख़ुतबा जुमा एम. टी.ए. पर जो आता है इस को हर दफ़ा ज़रूर सुना करें।

हुज़ूर अनवर ने मुहतमिम साहिब तब्लीग़ को तलक़ीन फ़रमाई कि वे मैंबरान मजलिस-ए-आमला जो नैशनल, रीजनल और लोकल सतह पर ख़िदमत बजा ला रहे हैं वह भरपूर अंदाज़ में तब्लीग़ में हिस्सा लें और उनके निर्धारित टार्गेट्स होने चाहिए ताकि उन्हेंmotivate किया जा सके।

मुहतमिम साहिब इशाअत को हिदायात से नवाज़ते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि उन्हें ख़ुद्दाम को तवज्जा दिलानी चाहिए कि वह अपने मैगज़ीन के लिए कुछ लिखा करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जो पढ़े लिखे हैं और शहरों में रहते हैं उन्हें तवज्जा दिलाएँ कि उन्हें कुछ मज़ामीन लिखने चाहिए। उनमें से कुछ को लिखना चाहिए कि उन्होंने किस तरह अहमदियत क़बूल की, उनके माता पिता ने किस तरह अहमदियत क़बूल की। अहमदियत क्या है? हमें अहमदियत को क्यों क़बूल करना चाहिए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम की मसीह मौऊद के हवाला से किया भविष्यवाणियाँ हैं। तो इस तरह यह उनके इलम और ईमान को बढ़ाने वाली तहरीरें होंगी। फिर आप उन्हें जमात अहमदिया मुस्लिमा के लिए मज़ीद लिखने की तवज्जा दिला सकते हैं और उनके आर्टीकल देखकर बाअज़ अन्य ख़ुद्दाम भी मज़ामीन लिखने लगेंगे या कम से कम वे अपने ईमान में बढ़ने की कोशिश करेंगे।

मुहतमिम तर्बीयत नौ-मुबाईन श्रीमान बाऊरू अहमद रशीद साहिब से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया कि क्या आप पैदाइशी अहमदी हैं या आपने ख़ुद बैअत की है? उन्होंने बताया कि मैं पैदाइशी अहमदी नहीं हूँ, मैंने ख़ुद बैअत की है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मुख़्त-लिफ़ गिरोहों के लिए, मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब से बैअत करने वालों के लिए मुख़्तलिफ़ मंसूबे होने चाहिए। यह संभव बात है कि ऐसे ख़ुद्दाम जो मुस्लमान थे उनमें से एक तादाद जो अहमदियत में शामिल होती है वहृअ नमाज़, सूरः फ़ातिहा और क़ुरआन क्रीम पढ़ना जानते हों। उनको अहमदियत के बारे में ज़्यादा बताना चाहिए और उनका इस्लामी इलम बढ़ाने की कोशिश करें और जो ईसाइयत में से शामिल होते हैं उनके लिए मुख़्तलिफ़ तर्बीयती प्रोग्राम होना चाहिए। उनको चाहिए कि वे नमाज़ के अल्फ़ाज़ सीखें, सूरत फ़ातिहा सीखें। उनको नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा बताएं और नमाज़ का मतलब (अनुवाद) सिखाएँ और यह कि पांचों समय नमाज़ क्यों अदा करनी चाहिए। इसी तरह दूसरे ग्रुपस हैं। हर ग्रुप का मुख़्तलिफ़ प्रोग्राम होना चाहिए न कि सब के लिए एक ही प्रोग्राम।

तथा फ़रमाया कि जो सूरत फ़ातिहा जानते हैं उनको उसका अनुवाद भी सीखना चाहिए, यूं वे मज़ीद तवज्जा के साथ नमाज़ पढ़ेंगे। तो इस तरह प्रत्येक लफ़्ज़ जो नमाज़ में पढ़ा जाता है इस का मतलब आना चाहिए। यह ईमान को भी तक़वियत बख़्शेगा और ख़ुदा तआला की हस्ती पर भी यक़ीन अता करेगा।

इस मुलाक़ात के अंत पर हुज़ूर अनवर ने जुमला अराकीन मजलिस-ए-आमला को दुआइया कलिमात से नवाज़ते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला आपको अपनी हिफ़ाज़त में रखे और जमात के लिए मेहनत से काम करने की तौफ़ीक़ बख़्शे और सारे मुल्क में आपको इस्लाम अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अल्लाह आप सब पर फ़ज़्ल फ़रमाए। अस्सलामो अलैकुम अल्लाह हाफ़िज़।

(अल् फ़ज़्ल इंटरनैशनल 25 मार्च 2022 ई.)

★ ★ ★

परमाणु विकिरण के हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए होम्योपैथिक उपचार

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने परमाणु विकिरण से बचने के लिए बचाव के तौर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह का नियुक्त होम्योपैथिक नुस्खा निम्नलिखित ढंग से प्रोयोग करने का आदेश फ़रमया तथा फ़रमाया दुआ भी करें की अल्लाह तआला प्रत्येक को अपनी सुरक्षा में रखें। आमीन।

هوالشافی

प्रयोग का ढंग		वृद्ध लोगों के लिए	10 से 15 साल के बच्चों के लिए	10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए	गर्भवती/स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए
पहली खुराक		Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पहली खुराक के 7 दिन बाद	दूसरी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
दूसरी खुराक के 7 दिन बाद	तीसरी खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
तीसरी खुराक के 7 दिन बाद	चौथी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
चौथी खुराक के 7 दिन बाद	पाँचवीं खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पाँचवीं खुराक के 7 दिन बाद	छठी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान
में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें
सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3) अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित
चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात
जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़्म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2) (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें , नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान
01872-501130 दफ़्तर , 09682587713,09682627592
E-mail : diwan@qadian.in

★ ★ ★

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3)अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित
चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात
जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2) (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान
01872-501130 दफ़्तर
09682587713,09682627592
E-mail : diwan@qadian.in

★ ★ ★

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमात में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

★ ★ ★

اب دیکھئے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निमार्ण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AIICCE-0289/Raj.

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 02 May 2024 Issue No. 18

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

दारुस्सनाअत कादियान
(Ahmadiyya Vocational Training Centre)
में वर्ष 2024-2025 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्न-लिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing
Electrician
Welding
Motor Vehicle
AC & Refrigerator
Diesel Mechanic
Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़्वाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।
अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198
(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

दहेज का प्रदर्शन एक ग़लत रस्म है

हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"शादी ब्याह के अवसर पर कुछ फ़ुज़ूल किस्म की रस्में हैं, जैसे बरी को दिखाना या वह सामान जो दूलहा वाले दूल्हन के लिए भेजते हैं इस का इज़हार, फिर जहेज़ का इज़हार, बाक़ायदा नुमाइश लगाई जाती है। इस्लाम तो केवल हक़ महर के इज़हार के साथ निकाह का ऐलान करता है, बाक़ी सब फ़ुज़ूल रस्में हैं। एक तो बरी या दहेज की नुमाइश से उन लोगों का उद्देश्य जो साहब-ए-तौफ़ीक़ हैं केवल बढ़ाई का इज़हार करना होता है कि देख लिया हमारे शरीकों ने भाई बहन या बेटा बेटी को शादी पर जो कुछ दिया था हमने देखो किस तरह इस से बढ़कर दिया है। केवल मुक़ाबला और नुमाइश है .. केवल रस्मों की वजह से,अपनी नाक ऊंचा रखने की वजह से ग़रीबों को मुश्किलात में, कर्ज़ों में ना गिरफ़्तार करें और दावा यह है कि हम अहमदी हैं और बैअत की दस शरायत पर पूरी तरह अमल करेंगे .. जबकि बैअत करने के बाद तो वे यह अहद कर रहा है कि संसारिक लोभ और लालच से बाज़ आजाएगा और अल्लाह और उसके रसूले सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हुकूमत मुकम्मल तौर पर अपने ऊपर तारी कर लेगा। अल्लाह और रसूले करीम हम से क्या चाहते हैं ,यही कि रस्म और रिवाज और संसारिक लोभ और लालच छोड़कर मेरे अहकामात पर अमल करो।"

(शरायत-ए-बैअत और अहमदी की ज़िम्मेदारियाँ, पृष्ठ 101 से 103)

(विभाग रिश्ता नाता, नज़ारत इस्लाह इरशाद मर्कज़िया कादियान)

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad